

अंतरा

सनातन धर्म में ज्येष्ठ माह को विशेष महत्वपूर्ण माना जाता है। वैशाख पूर्णिमा के बाद ज्येष्ठ माह की शुरुआत होती है। हिंदू धर्म में ज्येष्ठ माह के प्रत्येक मंगलवार का विशेष महत्व माना जाता है। इस माह के मंगलवार को 'बड़ा मंगल' कहा जाता है, जो भगवान हनुमान की पूजा के लिए अत्यंत शुभ होता है। इस साल ज्येष्ठ माह का महत्व और भी बढ़ गया है, क्योंकि इस बार अधिकमास का दुर्लभ संयोग बन रहा है। इसी वजह से सामान्य चार या पांच की बजाय पूरे आठ बड़े मंगल पड़ रहे हैं, जो अपने आप में बेहद खास हैं। खास बात यह है कि अधिमास (पुरुषोत्तम मास) की वजह से आठ बड़े मंगल का विशेष संयोग मिलेगा, जो सामान्य वर्षों की तुलना में दोगुना है। इसकी वजह से हनुमान जी की उपासना का दोहरा अवसर प्राप्त होगा। इनमें पहले और अंतिम मंगल का विशेष धार्मिक महत्व होता है। इस दिन भक्त सुंदरकांड और हनुमान चालीसा का पाठ करते हैं। मान्यता है कि

यदि कोई व्यक्ति लगातार 40 दिनों तक सुंदरकांड और हनुमान चालीसा का पाठ करता है, तो उसे हनुमान जी की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

क्यों है ज्येष्ठ माह के मंगल की मान्यता

इस वर्ष ज्येष्ठ माह की शुरुआत 2 मई से होकर 29 जून तक रहेगी। पंचांग के अनुसार, ज्येष्ठ महीने का पहला बड़ा मंगल 5 मई को पड़ रहा है। यह दिन हनुमान भक्तों के लिए बेहद खास माना जाता है, क्योंकि इसी के साथ बड़े मंगल के पावन पर्व की शुरुआत होती है और भक्त पूरे उत्साह व श्रद्धा के साथ बजरंगबली की पूजा-अर्चना करते हैं।

रामायण की कथा के अनुसार जब प्रभु श्रीराम माता सीता की खोज कर रहे थे, तो हनुमान जी पहली बार राम जी से मिले थे। हनुमान जी ने राम जी और लक्ष्मण जी की सच्चाई जानने के लिए एक पुरोहित का रूप बनाया हुआ था। जब हनुमान जी ने प्रभु श्रीराम और लक्ष्मण जी की सच्चाई जानी, तो उन्होंने प्रभु श्रीराम को प्रणाम किया। हनुमान जी और प्रभु श्रीराम का मिलन पहली बार ज्येष्ठ माह के मंगलवार को हुआ था, इसलिए इस ज्येष्ठ माह के मंगलवार को बड़ा मंगलवार के नाम से जाना गया।

श्रद्धा और उपासना का पावन दिन ज्येष्ठ माह के 'बड़े मंगल' पर हनुमान मंदिरों में भक्तों का तांता लगा रहता है। इस दिन पवनपुत्र को सिंदूर और चोला अर्पित कर विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। हनुमान चालीसा और बजरंग बाण का पाठ करना भक्तों के लिए विशेष फलदायी और मानसिक शांति देने वाला माना जाता है। निःस्वार्थ सेवा की अनूठी परंपरा का प्रतीक यह पर्व केवल पूजा तक सीमित नहीं है, बल्कि सेवा का एक जीवंत उदाहरण है। जगह-जगह आयोजित होने वाले विशाल भंडारे इस दिन की पहचान हैं, जहां समाज का हर वर्ग एक साथ मिलकर प्रसाद ग्रहण करता है। बड़े मंगल पर जगह-जगह प्याऊ (ठंडा पानी) लगवाने और शरबत-प्रसाद वितरित करने का विधान है, जो हनुमान जी की कृपा पाने के लिए उत्तम माना जाता है।



ज्येष्ठ के मंगल आस्था और सेवा का संगम



व्रत और उपायों का विशेष फल

ज्येष्ठ माह में किए गए व्रत और उपायों का विशेष फल मिलता है, क्योंकि इस समय सूर्य की प्रखरता अधिक होती है और यह ऊर्जा के स्तर को प्रभावित करता है। इस माह में की गई पूजा और तपस्या से पुण्य प्राप्ति होती है।

पूजा विधि

सुबह जल्दी स्नान कर लाल वस्त्र पहनें। हनुमान जी को सिंदूर का चोला और चमेली का तेल अर्पित करें। भोग में बूंदी के लहू या गुड़-चना चढ़ाएं। ॐ हनुमते नमः मंत्र का जाप करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें।

बड़े मंगल व्रत के लाभ

- संकटों से मुक्ति: हनुमान जी को संकटमोचन कहा जाता है। बड़ा मंगल का व्रत करने से जीवन की बड़ी से बड़ी बाधाएं दूर हो जाती हैं।
- मंगल दोष का निवारण: जिनकी कुंडली में मंगल भारी है, उनके लिए ये 8 मंगलवार सेवा और दान के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- इच्छा पूर्ति: सच्चे मन से सुंदरकांड या हनुमान चालीसा का पाठ करने से साधक की मनोकामनाएं पूरी होती हैं।
- सेवा और दान: इस दिन जगह-जगह भंडारे और पानी पिलाने की व्यवस्था करने की परंपरा है।

भक्ति का आनंद

भक्ति क्या है? भक्ति में आनंद कैसे आता है? भक्तों के सदा खुश रहने का कारण क्या है? भक्ति एक समर्पण है, जहां पर भक्त की नहीं, भगवान की चलती है, भक्ति मार्ग पर आपको खुद अपने को तराशना और परखना है कि तलवार के जैसे मार्ग पर आप चल पाएंगे, कहीं आप साधना की कठिनाइयों से घबरा तो नहीं जाएंगे? आपको इसी दृढ़ इच्छा शक्ति को परखने लिए बार-बार गुरु और भगवान परीक्षा लेते हैं, इसीलिए यह सब तो वह ही बता सकता है, जिसने भक्ति की हो या खुद भक्ति करके जानो।



भक्ति का आनंद भक्ति करके ही पाया जा सकता है। भक्त के खुश रहने का कारण यह है कि वह अपना सबकुछ यानी सुख-दुःख सब अपने भगवान को अर्पित कर देता है, उनकी इच्छा पर सबकुछ छोड़ देता है।

यही कारण है कि उसको सुख, दुःख, धूप, छांहों नहीं हरा पाती और वह हर हाल में सदा खुश रहता है, क्योंकि वह हर चीज के पीछे भगवान की इच्छा मानता है। यह



अनिल सुशंसु
ज्योतिषाचार्य

निष्काम स्थिति तब आती है, जब भक्त पूर्ण रूप से कामना रहित हो जाता है, उसके मन में किसी तरह की कोई कामना नहीं रहती, जब मन से कामनाओं का अंत हो जाता है। तब ही भगवान का साक्षात्कार हो जाता है। भगवान खुद अपने भक्त का ध्यान रखने लगते हैं, जिस तरह

एक मां अपने बच्चे का ध्यान रखती है, वह उसको एक पल के लिए अकेला नहीं छोड़ती, लेकिन जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता जाता है, वह खुद सोरे निर्णय लेने लगता है, धीरे-धीरे मां उसे उसके हाल पर छोड़कर निश्चिंत हो जाती है और बच्चा अपने भले बुरे के लिए खुद जिम्मेदार होता है। उसी तरह जब हम भगवान का साथ छोड़ देते हैं, तो भगवान भी हमारा साथ छोड़ देते हैं।

इसलिए भगवान के सामने सदैव बच्चा बने रहो, इसी में हमारा फायदा है। भगवान पर पूरी तरह अपना विश्वास बनाएं रखो, अपने विश्वास को किसी भी स्थिति में कमजोर मत पड़ने दो, यकीन रखो वह जो करेगा, अच्छा ही करेगा, यही भरोसा आपको कहीं कमजोर नहीं पड़ने देगा।

पौराणिक कथा



जहां भाव, वहां भगवान

बहुत समय पहले वृंदावन में कृष्णदास नाम के एक बाबा रहते थे। एक बार उन्होंने किसी ग्रंथ में पढ़ा कि यदि कोई सेवा बिना नागा किए लगातार बारह वर्ष तक की जाए, तो साधक को मनचाहा फल अवश्य मिलता है। बाबा ने निश्चय किया कि वे बारह वर्ष तक प्रतिदिन ठाकुर जी को माला पहनाएंगे और फलस्वरूप बस यही चाहेंगे कि तेरहवें वर्ष के पहले दिन स्वयं ठाकुर जी उनकी कुटिया पर आकर उनसे माला ग्रहण करें।

उस दिन से बाबा की सेवा आरंभ हो गई। वे प्रतिदिन मंदिर जाते, प्रेम से माला पहनाते और मुस्कुराकर कहते- "लाला, अब इतने दिन हो गए, बस इतने दिन और!" समय बीतता गया और देखते-देखते बारह वर्ष पूर्ण होने को आए। अंतिम दिन बाबा ने बड़े विश्वास से कहा- "मेरी सेवा पूर्ण हुई, अब कल आपको मेरी कुटिया पर आना ही होगा। मैं छपन भोग सजाकर प्रतीक्षा करूंगा।"

अगले दिन बाबा भोर में उठे, स्नान किया, कुटिया सजाई और छपन भोग तैयार कर दिए। फिर वे पूरे दिन ठाकुर जी की राह देखते रहे। समय बीतता गया- दोपहर, संध्या, फिर रात्रि यहां तक कि मंदिर में शयन आरती भी हो गई, पर ठाकुर जी नहीं आए। अब बाबा का हृदय टूट गया। वे क्रोध और घेदना में भर उठे- "मेरी ही भूल थी, मैं किसी और की आराधना करता तो अच्छा होता।" क्रोध में उन्होंने कुटिया उजाड़ दी, उपवन नष्ट कर दिया और छपन भोग की पोटली बांधकर चल पड़े। चलते-चलते उन्होंने सोचा- "बारह वर्ष कृष्ण

को दिए, अब बारह दिन श्रीजी को देकर देखता हूँ।" यह सोचकर वे बरसाना की ओर बढ़ चले। मार्ग में अचानक गायों का विशाल झुंड आ गया। बाबा किनारे खड़े हो गए। समय बीतता गया, पर गायों का अंत न हुआ। तभी एक नन्हा ग्वाला दिखाई दिया। बाबा ने पूछा- "ये किसकी गायें हैं?" ग्वाल ने हंसकर कहा- "नंद भवान की हैं, पूरी नौ लाख। अभी देर लगेगी, आप बैठ जाइए।" बाबा थके और भूखे थे। ग्वाल ने उनकी पोटली से आती सुगंध पाकर कहा- "मुझे भी थोड़ा खाने को दे दो।" बाबा ने पोटली खोली। ग्वाल ने कहा- "मेरे हाथ गंदे हैं, आप अपने हाथ से खिला दीजिए।" जैसे ही बाबा ने पहला कौर उसके मुख में रखा, उसकी आंखें भर आईं। बाबा ने पूछा- "क्या हुआ?" ग्वाला बोला- "आज सुबह से प्रतीक्षा कर रहा था, किसी ने मुझे माला नहीं पहनाई।" इतना सुनते ही बाबा चौंक उठे- "अरे, कन्हैया तू!" और वे उसे गले से लगा बैठे। ठाकुर जी ने अपना दिव्य रूप प्रकट किया। बाबा भाव-विभोर हुए, पर अगले ही क्षण बोले- "अब समझा, आज तू क्यों आया है। जब तेरी ओर से हटकर मैंने श्रीजी की ओर कदम बढ़ाया, तब तू दौड़ा चला आया। जब एक कदम पर तू मिल गया, तो यदि मैं उनके चरणों में ही समर्पित हो जाऊं, तो क्या होगा!" यह कहकर बाबा बरसाना की ओर दौड़ पड़े। ठाकुर जी उन्हें रोकने के लिए पीछे-पीछे भागे। अंततः बाबा ने शेष जीवन श्रीजी के चरणों में समर्पित कर दिया और कृष्णदास से किशोरीदास बन गए।

-प्रमोद श्रीवास्तव

बोध कथा

खाली कटोरे का सच

एक छोटे से गांव में हरिदास नाम का एक वृद्ध संत रहते थे। लोग दूर-दूर से उसके पास अपनी समस्याएं लेकर आते और संत उन्हें सरल शब्दों में जीवन का मार्ग दिखाते। एक दिन एक धनवान व्यापारी उसके पास आया। वह बहुत चिंतित और असंतुष्ट दिख रहा था। व्यापारी बोला, "गुरुदेव, मेरे पास धन-दौलत, बड़ा घर, परिवार सब कुछ है, फिर भी मन में शांति नहीं है। मुझे हर समय किसी न किसी बात की चिंता रहती है। कृपया मुझे कोई उपाय बताइए।" संत हरिदास मुस्कुराए और बोले- "पहले तुम मेरे लिए एक काम करो। सामने रखे इस कटोरे में पानी भरकर ले आओ।"

व्यापारी ने कटोरा उठाया और पास के कुएं से पानी भरकर ले आया। संत ने कटोरे को देखा और बोले, "अब इसमें थोड़ा और पानी भरो।" व्यापारी ने कहा, "गुरुदेव, यह कटोरा तो पहले ही पूरा भर चुका है, अब इसमें और पानी नहीं आ सकता।" संत ने शांत स्वर में कहा, "यही तुम्हारे मन की स्थिति है। तुमने अपने

मन को इच्छाओं, चिंताओं और लालच से इतना भर लिया है कि उसमें शांति के लिए कोई जगह ही नहीं बची।"

व्यापारी चुप हो गया। संत ने आगे कहा- "जब तक तुम अपने मन के इस कटोरे को खाली नहीं करोगे, तब तक उसमें सुकून नहीं भर सकता। तुम्हें अपनी अनावश्यक इच्छाओं को त्यागना होगा और जो है, उसमें संतोष करना सीखना होगा।" व्यापारी ने विनम्रता से पूछा, "गुरुदेव, यह कैसे संभव है?" संत ने उत्तर दिया, "हर दिन कुछ समय अपने लिए निकालो। अपनी उपलब्धियों के लिए आभार प्रकट करो और उन चीजों को छोड़ना सीखो, जो तुम्हें भीतर से बोझिल बनाती हैं। धीरे-धीरे तुम्हारा मन हल्का होने लगेगा और शांति अपने आप उसमें स्थान बना लेगी।" व्यापारी ने संत के चरणों में झुककर प्रणाम किया। उस दिन के बाद उसने अपने जीवन में छोटे-छोटे बदलाव करने शुरू किए। समय के साथ उसकी चिंताएं कम होने लगीं और वह पहले से अधिक संतुष्ट और शांत रहने लगा। कथा की सीख है कि जब तक मन इच्छाओं और चिंताओं से भरा रहेगा, तब तक उसमें शांति के लिए स्थान नहीं बन सकता।

रासलीला एक दिव्य प्रेम सुधा रस का समुद्र है। उसकी दो धाराएं हैं। दो ओर से आती हैं। टकराती हैं और एक हो जाती हैं। पहली लहर दूसरी हो जाती है। दूसरी लहर पहली हो जाती है। इस प्रकार प्रेमी-प्रियतम, प्रियतम-प्रेमी के अनन्तम मिलन की यह अनंत धारा चलती रहती है। नया मिलन, नया रूप, नया रस, नई प्यास और नई तृप्ति। यही प्रेम रस का अद्वैत स्वरूप है। इसी का नाम रास है। एक कृष्ण, एक वृत्ति की अद्वैत रसभावना से ओत-प्रोत हृदय के रंगमंच पर संधिस्थानीय श्याम-ब्रह्म और तदाकार-वृत्तियों की धारा के रूप में गोपियों का नृत्य ही रासलीला है। रास में साहित्य, संगीत और कला (नृत्य) का समन्वय होता है। सत्यं शिवम सुंदरम् की यही पहचान है। इस रासलीला में काम (वासना) अंशमात्र भी नहीं है। देव, गंधर्व, किन्नर तथा नारद आदि भी आकाश से एवं श्रीमहादेव जी ने स्वयं गोपी बनकर गोपीश्वर महादेव के रूप में वंशीवट पर वृंदावन में रासलीला में प्रवेश कर महारासो को अपने तीनों नेत्रों से निहार कर रहे हैं। आज भी श्रीगोपेश्वर महादेव के रूप में निहार रहे हैं।



अद्वैतभाव का व्यक्त स्वरूप रासलीला

एक बात स्पष्ट समझ लेनी चाहिए कि रासलीला में गोपी के शरीर के साथ कोई लेना-देना नहीं है। यह साधारण स्त्री व पुरुष का नहीं, जीव और ब्रह्म का मिलन है। शुद्ध जीव का ब्रह्म के साथ विलास ही रास है। शुद्ध जीव का अर्थ है- माया के आवरण से रहित जीव। ऐसे जीव का ही ब्रह्म से मिलन होता है। इसीलिए गोपियों के साथ श्रीकृष्ण ने महारास से पूर्व चौरहरण लीला की थी। चौरहरण लीला में जब बाहरी आवरण उपाधि नष्ट हुई तो रासलीला हुई। जीव और ब्रह्म का तादात्म्य हुआ। जिस प्रकार वस्त्र देह ढकता है, उसी प्रकार वासना और अज्ञान आत्मा को ढक देते हैं और परमात्मा को दूर करते हैं। जब तक अज्ञान और वासना का आच्छादन दूर नहीं हो जाता, तब तक शिव से मिलन नहीं हो पाता। वस्त्र हरण लीला बुद्धिगत वासना, बुद्धिगत अज्ञान को उड़ा ले जाने की लीला है। वासना और अज्ञान रूपी वस्त्र प्रभु मिलन में बाधक हैं। इन्द्रियों के काम को हटाना सरल है, किंतु बुद्धिगत काम को निकाल बाहर करना बड़ा कठिन है। श्रीकृष्ण ने गोपियों के वासना रूपी आवरण को हटा दिया। शुद्ध-बुद्ध गोपियों के साथ महारास किया।

श्रीधरस्वामी के अनुसार पंचाध्यायी (भागवत में रास के 5 अध्याय) रासलीला निवृत्ति धर्म का परम फल है। रासलीला के 5 अध्याय पंच प्राणों के सूचक प्रतीक होते हैं। पंच प्राणों का ईश्वर के साथ रमण ही रास है। वेणुगीत की बांसुरी तो केवल पशु-पक्षियों को ही नहीं सबको सुनाई देती है। किंतु रासलीला की बांसुरी तो ईश्वर से मिलनातुर अधिकारी जीव गोपी को ही सुनाई देती है। रासलीला कोई साधारण स्त्री की नहीं, देह-मान भूली हुई, देहाध्यास से मुक्त स्त्री की कथा है। देहाध्यास नष्ट होने पर प्रभु की चिन्मयी लीला में प्रवेश मिलता है। अंतर्मुखी दृष्टि करके जीव जब भगवान के पास पहुंचता है, तब वे पूछते हैं- मेरे पास क्यों आया है? गोपियों से भी पूछा था- मेरे पास क्यों आई हो? पति सेवा तथा संतान सेवा करो, रात्रि में मिलन उचित नहीं। जीव को परमात्मा सहज नहीं मिलते हैं। जीव को भ्रांति होती है। संसार में रत रहो, वहीं तुमको सुख मिलेगा। मैं सुख नहीं, केवल आनंद ही दे सकता हूँ। ब्रह्म जीव को संसार में लौटाता है, प्रलोभन देता है। माया जाल में फंसाता है। नटवर नागर श्रीकृष्ण के इतना कहने पर गोपियों कहती हैं- 'पादौ पदं न चलतस्तव पादमूलदयामः कथं ब्रजमधो करवाम किं वा।। (श्रीमद्भागवत 10/29/34)। अर्थात् हे गोविन्द! हमारे पांव आपके चरण कमलों को छोड़कर एक पग भी पीछे हटने को तैयार नहीं हैं। हम ब्रज को लौटें तो कैसे? और यदि हम लौटें भी तो मन के बिना वहां हम क्या करें? हमारा मन आप में ही रमा हुआ है। हम भी आपके स्वरूप से तदाकार होना चाहती हैं। प्रभु ने सोचा कि इन गोपियों का प्रेम सच्चा है। जीव शुद्ध भाव से मुझसे मिलने आया है, तो उसे अपना लिया। श्रीकृष्ण ने एक साथ अनेक स्वरूप धारण किए। जितनी गोपियां थीं, उतने स्वरूप बना लिए और प्रत्येक गोपी के साथ एक-एक स्वरूप रखकर रासलीला आरंभ की। हजारों जन्मों का विरही जीव आज प्रभु के सम्मुख उपस्थित हो सका है। जीव आज ईश्वरमय

हो गया। वे दोनों एक हो गए। इस मिलन से जीव और ईश्वर दोनों को अति आनंद हुआ। गोपियां श्रीकृष्णमय तथा भावमय हो गईं। सभी हाथों से हाथ मिलाकर नृत्य करने लगीं। यह तो ब्रह्म से जीव का मिलन हुआ है। इस प्रकार अद्वैत सिद्धांत के आचार्य श्रीशुकदेवजी ने रासलीला में अद्वैत का वर्णन किया है।

महारास देखते-देखते ब्रह्मजी सोचने लगे कि कृष्ण और गोपियां निष्काम तो हैं, फिर भी देहभान भूलकर इस प्रकार पराई नारी से लीला करना शास्त्र मर्यादा का उल्लंघन ही है। ब्रह्मजी संशुभित हुए। ब्रह्मजी यह नहीं जानते थे कि यह रासलीला धर्म नहीं धर्म का फल है। श्रीकृष्ण ने एक और खेल रचा- उन्होंने सभी गोपियों को अपना स्वरूप दे दिया। अब तो सर्वत्र कृष्ण ही कृष्ण दिखाई दे रहे थे। गोपियां थी ही नहीं। सभी पीतांबर कृष्ण हैं और एक दूसरे से रास खेल रहे हैं। ब्रह्मजी ने मान लिया कि यह स्त्री-पुरुष का मिलन नहीं है।



डॉ. प्रदीप दिवेदी 'रम्य'
आध्यात्मिक लेखक

श्रीकृष्ण गोपीरूप हो गए हैं। ब्रह्मजी ने श्रीकृष्ण को साष्टांग प्रणाम किया। यह विजातीय तत्व का स्वीत्व और पुरुषत्व का मिलन नहीं अंश और अंशी का मिलन है। गोपियां श्रीकृष्णमय हो गईं, प्रभुसुख बन गईं। ब्रह्मसुख हो जाने के बाद जीव का स्वत्व कहाँ रहा? शास्त्र कहता है कि श्रीकृष्णस्तु भगवान स्वयं। तब यह बात अपने आप स्पष्ट हो जाती है कि कृष्ण कामी नहीं, भोगी नहीं, बल्कि निष्काम कर्म के अधिष्ठाता एवं स्वयं योगेश्वर हैं। जिस प्रकार उन्होंने ब्रह्मजी का गर्व गो-वत्स हरण लीला करके, अग्निका का गर्व दावानल पान लीला करके और इन्द्र का गर्व गोवर्धन धारण लीला करके नष्ट किया, उसी प्रकार उन्होंने रासलीला करके कामदेव का गर्व भी नष्ट किया। इन लीला प्रसंगों में यह बात स्पष्ट हो जाती है कि रासलीला महालीला है। अद्वैतभाव का व्यक्त स्वरूप है। अंश का अंशी में परम मिलन है। भेदबुद्धि रूप लौकिक दृष्टि का निरसन का अभेदबुद्धि रूप आध्यात्मिक यथार्थ तत्व का महिमामंडित स्वरूप है।